भारतीय जनता पार्टी
Bharatiya Janata Party

मोहब्बत की दुकान या नफरत का मेगामॉल!

प्रिय राहुल जी,

आशा है आप स्वस्थ और सानंद होंगे।

आपकी 'मोहब्बत की दुकान' के बारे में सुनकर बहुत अच्छा लगा। सचमुच मोहब्बत में परस्पर जोड़ने की भावना निहित है। इस पर चलकर समाज और देश को और ज्यादा सशक्त बना सकते हैं। कांग्रेस यदि वास्तविकता में इसी पॉजिटिव सोच पर चले तो वाकई कितना बेहतर हो। लेकिन अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि आपकी कथनी और करनी में बहुत अंतर है!

अमेरिका में आपने इस 'मोहब्बत की दुकान' से अपनी मातृभूमि और देश के लिए जी-भरकर नफरत फैलाई है। वैसे नफरत फैलाना आपके परिवार और आपकी पार्टी के लिए कोई नई बात नहीं है। आप लोगों की तो इसमें महारत रही है। अपने ही परिवार के इतिहास के पन्ने पलटिए तो वो चीख-चीखकर नफरत के किस्सों की गवाही देंगे और आपके पूरे परिवार ने नफरत का मेगा मॉल खोल रखा है।

आज मैं आपका ध्यान उन चार ऐसे विषयों की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं, जिसे देखकर आपके साथ ही हर किसी को समझ में आएगा कि आपकी मोहब्बत की दुकान की असलियत क्या है।

1. कांग्रेस के राज में ही सबसे अधिक दंगे हुए और नफरत की दुकानें सजाई गईं।
2. नेहरू-गांधी परिवार ने कांग्रेसी नेताओं के साथ किस प्रकार की बदसलूकी की।
3. आपके परिवार ने अपने ही रिश्तेदारों से किस प्रकार का अमानवीय बर्ताव किया।
4. देश की महान विभूतियों के प्रति आपके परिवार की नफरत आज भी प्रकट होती है।

‘मोहब्बत’ में नरसंहार

आपको मोहब्बत की दुकान पर बात करने से पहले कांग्रेस राज में हुए नरसंहारों के बारे में भी जरूर जानना चाहिए। वह चाहे पं. नेहरू हों या आपके पिता राजीव गांधी, इन्होंने न सिर्फ हजारों निर्दोष लोगों के कत्लेआम को जायज ठहराया, बल्कि नफरत की आग को और तेजी से भड़काया। आपको याद दिला दें कि आजाद भारत में पहला नरसंहार नेहरू जी के ही कार्यकाल में हुआ था। 1948 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या के बाद महाराष्ट्र में हजारों लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। इसके पीछे ‘मोहब्बत’ का पैगाम देने वाले कांग्रेसी ही थे। उनकी गिरफ्तारियां भी हुई थीं। ऐसे समय में जब देश के प्रधानमंत्री को शांति और सद्भावना के प्रयास करने चाहिए थे, तब उन्होंने भड़काने वाला भाषण देकर नफरत का जहर उगला था। उन्होंने कहा था - “हम एक दफे गफलत में पड़े और उस जहर ने फैलकर काफी हिन्दुस्तान को नुकसान पहुंचाया। और आखिर में वो जबरदस्त सदमा हमको पहुंचाया कि हमारे देश के राष्ट्रपिता... उनको खत्म किया। उसका एक जबरदस्त असर देश पर हुआ और होना ही था।”

पिता की तरह बेटी इंदिरा गांधी भी देश के साधु-संतों के खिलाफ थीं। उनके राज में साधु-संत गोलीबारी के शिकार बने। 7 नवंबर, 1966 को गोहत्या पर प्रतिबंध की मांग को लेकर संसद के बाहर जुटी साधु-संतों की भीड़ पर अंधाधुंध गोलियां बरसाई गईं। सांसद घनश्याम तिवाड़ी ने अपने ब्लॉग में उस घटना की आंखों देखी लिखी, "जिस प्रकार कसाई गोमाता पर अत्याचार करता है, उसी प्रकार कांग्रेस सरकार ने उन गोभक्तों पर अत्याचार किये। सड़क पर गिरे साधुओं को उठाकर गोली मारी गई। फलतः हजारों लोग घायल हुए और बहुत सारे संत मारे गये।"

कांग्रेस की तो दलितों के प्रति ‘मोहब्बत’ की भी कई दास्तानें हैं। यह अलग बात है कि ये खून से सनी हैं। वह चाहे अल्मोड़ा जिले का कफल्टा नरसंहार हो या फिरोजाबाद जिले के साढ़पुर गांव में हुआ नरसंहार। दलितों के ये दोनों ही नरसंहार तब हुए, जब इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थीं। 9 मई, 1980 को अल्मोड़ा में बारात में शामिल 14 दलितों की निर्मम हत्या कर दी गई थी।

वहीं फिरोजाबाद में 30 दिसंबर, 1981 को दलित समाज के 10 लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया था।

यह सिलसिला यहीं नहीं थमा। जनसंहार को बढ़ावा देने का जुनून पं. नेहरू और इंदिरा गांधी से होते हुए आपके पिता राजीव गांधी तक भी आया। 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या और फिर सिखों के कत्लेआम के बाद 19 नवंबर को दिल्ली के बोट क्लब में उनका भाषण बताता है कि उन्होंने विरासत में मिली नरसंहार की परंपरा को कितना सहेजकर रखा था। आप ही बताइए कि भाषण का यह हिस्सा आखिर किस की मोहब्बत की बात करता है-
"जब इंदिरा जी की हत्या हुई थी, तो हमारे देश में कुछ दंगे-फसाद हुए थे। हमें मालूम है कि भारत की जनता को कितना क्रोध आया, कितना गुस्सा आया और कुछ दिन के लिए लोगों को लगा कि भारत हिल रहा है। जब भी कोई बड़ा पेड़ गिरता है तो धरती थोड़ी हिलती है।"

जरा सोचिए, आपके पिता की मोहब्बत की दुकान में दंगों के दौरान अनाथ और बेघर हो गए उन हजारों सिखों के लिए दो शब्द भी न थे। सिखों के संहार का जिक्र तक न होने से ये साफ हो गया कि कांग्रेस मोहब्बत की राह पर नहीं चलती, बल्कि जख्मों पर नमक छिड़कती है। यह इससे भी साबित होता है कि दंगों के उस वीभत्स दौर में मरहम लगाने के बजाए कांग्रेस नेता जगदीश टाइटलर और सज्जन कुमार लोगों को भड़काने में लगे हुए थे। दंगों के प्रमुख आरोपी जगदीश टाइटलर तो आज भी आपके परिवार के बेहद करीबी बने हुए हैं। यानि आप नफरत की आग में सिर्फ जलाते ही नहीं, बल्कि जले पर नमक छिड़कने का मजा भी लेते हैं।

कांग्रेस की सियासी 'मोहब्बत'

आपकी कांग्रेस पार्टी की तो शुरू से परंपरा रही है कि वो अपने वरिष्ठ नेताओं को भी नहीं बख्शती है। उनके निधन के बाद ही नहीं, जीते-जी भी उनका अपमान करती रही है। शुरुआत पं. नेहरू से ही करते हैं। नेहरू जी के दिल में न जाने ये कैसी 'मोहब्बत' थी कि उन्होंने तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद को सलाह दी कि वो सरदार वल्लभभाई पटेल के अंतिम संस्कार में न जाएं। वो 15 दिसंबर 1950 का दिन था। गृह मंत्री सरदार पटेल के निधन से पूरा भारत गमगीन था, देशभर में उनके चाहने वालों की आंखें नम थीं। अखंड भारत के 'लौह पुरुष' के देहांत के वक्त सरकार और संगठन, दोनों ही जगह नेहरू से ज्यादा सरदार के समर्थकों और चाहने वालों की भरमार थी। सब के सब सरदार के अंतिम संस्कार में भाग लेकर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहते थे। लेकिन तभी अचानक पं. नेहरू ने अपनी 'मोहब्बत की दुकान' खोल ली। भारत में हैदराबाद के विलय के वक्त वहां केंद्र सरकार के प्रतिनिधि और तत्कालीन केंद्रीय मंत्री केएम मुंशी ने अपनी किताब Pilgrimage To Freedom में लिखा है-

"जब सरदार का बंबई में देहांत हुआ, उस वक्त जवाहरलाल नेहरू ने अपने मंत्रियों और अधिकारियों को निर्देश दिया कि वो दाह-संस्कार में शामिल होने के लिए न जाएं। यहां तक कि उन्होंने तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद को भी कहा कि वो बंबई न जाएं। यह ऐसा विचित्र आग्रह था, जिसे राजेंद्र प्रसाद जी ने स्वीकार नहीं किया और अंतिम संस्कार में शामिल हुए। नेहरू जी का 'कुतर्क' था कि राष्ट्र के मुखिया को एक मंत्री के अंतिम संस्कार में भाग नहीं लेना चाहिए, ये एक गलत नजीर होगी।"

इतिहास के पन्नों में यह भी दर्ज है कि किस प्रकार सरदार पटेल के पद-त्याग के बाद ही पं. नेहरू को देश के पहले प्रधानमंत्री की कुर्सी नसीब हुई थी। लेकिन देश के लौहपुरुष के प्रति नेहरू जी और आपकी पार्टी का नफरत का भाव कुछ ऐसा था कि कांग्रेस शासन में उन्हें भारत रत्न देने के बारे में सोचा तक नहीं गया। ऐसे में जो सम्मान 1950 के दशक में ही उनके नाम होना चाहिए था, वह वर्ष 1991 में जाकर उन्हें दिया गया।

पं. नेहरू की नफरत की आग से तो हमारे संविधान के निर्माता बाबासाहेब भी नहीं बच पाए थे। यह आग इतनी खतरनाक थी कि कांग्रेस और नेहरू ने पहले आम चुनाव में ही उनकी हार तक सुनिश्चित कर दी। राजनीति की मुख्यधारा से डॉ. अम्बेडकर को केवल इसलिए दूर रखने का हरसंभव प्रयास किया गया, क्योंकि वे हर मामले में नेहरू से कहीं अधिक योग्य थे। बाबासाहेब से तिरस्कार के इस भाव को परिवार की अगली पीढ़ियों ने भी अपनाए रखा। साल 1990 में उन्हें भारत रत्न से भी तब नवाजा जा सका, जब कांग्रेस सत्ता से बाहर हो चुकी थी।

नेहरू जी तो मशहूर कवि और गीतकार मजरूह सुल्तानपुरी को भी नफरत का निशाना बनाने से नहीं चूके थे। उन्हें सिर्फ इसलिए सालभर की जेल कटवाई गई, क्योंकि एक रैली में उन्होंने पं. नेहरू को कॉमनवेल्थ का दास और हिटलर कहा था। मजरूह जी ने बस इतना सा लिखा था-

*"*अमन का झंडा इस धरती पे
किसने कहा लहराने न पाए
ये भी कोई हिटलर का है चेला,
मार ले साथी, जाने न पाए*!*
कॉमनवेल्थ का दास है नेहरू
मार ले साथी, जाने न पाए*!"*

राहुल जी, जब आप मोहब्बत की दुकान खोलने की बात करते हैं तो तुरंत वह तस्वीर भी उभरती है कि आपकी दादी ने किस प्रकार देश के लोकतंत्र को 19 महीनों तक अपनी मुट्ठी में कैद रखा था। 'आपातकाल' में जिसने भी लोकतंत्र के अधिकारों के लिए आवाज उठाई, उसे जेल में डाल दिया गया। देश और देशवासियों से नफरत के उस काले चैप्टर को देखते हुए आपकी 'मोहब्बत' एक कॉमेडी से ज्यादा कुछ नहीं लगती!

आज जैसे गांधी परिवार से बाहर के मल्लिकार्जुन खरगे कांग्रेस अध्यक्ष हैं, वैसे ही कभी सीताराम केसरी पार्टी के अध्यक्ष हुआ करते थे। उनके साथ तो कांग्रेस की 'मोहब्बत' की दास्तां और हैरान कर देने वाली है। केसरी जी को बेइंतहा बेइज्जती के साथ कांग्रेस अध्यक्ष पद से बेदखल किया गया था। कांग्रेसियों ने उनकी धोती तक खोल दी थी और बाथरूम में बंद कर दिया था। यह बात 1998 की है। तब लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की 142 सीटें आई थीं। उस चुनाव में सोनिया गांधी ने 130 से ज्यादा रैलियों को संबोधित किया था, फिर भी कांग्रेस अपनी परंपरागत अमेठी की सीट तक हार गई थी। पार्टी की हार का ठीकरा गांधी परिवार ने सीताराम केसरी पर फोड़ दिया, जबकि उन्होंने पूरे चुनाव में एक भी रैली नहीं की थी। केसरी जी को अपमानित कर हटाने के बाद प्रणब मुखर्जी के प्रस्ताव पर सोनिया गांधी पहली बार पार्टी अध्यक्ष बनी थीं।

कांग्रेस ने तो सारी संवेदनाओं को तिलाजंलि देते हुए 2004 में अपनी 'मोहब्बत की दुकान' पूर्व प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के लिए भी लगाई थी। इसकी पोल आप की ही पार्टी की नेता मार्गरेट अल्वा ने अपनी किताब Courage and Commitment में खोली थी। इसमें उन्होंने लिखा,
"पीएम राव का पार्थिव शरीर एआईसीसी कैंपस में भी नहीं जाने दिया गया था। गेट के बाहर ही फुटपाथ पर गन कैरिज पार्क किया गया। जो भी मतभेद थे, लेकिन वह प्रधानमंत्री रहे थे, वह कांग्रेस अध्यक्ष थे। वह मुख्यमंत्री और पार्टी महासचिव भी रहे। जब किसी की मृत्यु हो चुकी है, तब आप उससे इस तरह का व्यवहार कैसे कर सकते हैं।"

आपके यहां की 'मोहब्बत' कुछ ऐसी है कि जिन प्रणब मुखर्जी ने सोनिया गांधी के पार्टी अध्यक्ष बनने का मार्ग प्रशस्त किया था, उन्हें भी नहीं बख्शा गया। प्रणब मुखर्जी को 2019 में जब भारत रत्न से नवाजा जा रहा था, तब न तो सोनिया गांधी और न ही आप उसमें शामिल हुए थे।

और आप किस मोहब्बत की बात करते हैं। अपने जीवन की आधी सदी से ज्यादा कांग्रेस को समर्पित करने वाले गुलाम नबी आजाद के साथ आपने क्या किया, याद है ना! आजाद ने तो आपको जी23 की चिठ्ठी लिखकर पार्टी के हालातों का आईना ही दिखाया था। आपको यह रास नहीं आया और उन्हें पिछले साल अपना ही 'घर' छोड़ने को मजबूर कर दिया। तभी तो उन्हें कहना पड़ा कि कांग्रेस अनपढ़ों की जमात है, इस पार्टी में बने रहने के लिए रीढ़-विहीन होना जरूरी है। आजाद ने साफ कहा, "कांग्रेस छोड़ने की वजह राहुल गांधी हैं और उनके विदेशी कारोबारियों से रिश्ते हैं।" इस पर तो आपकी अब तक बोलती बंद है।

कांग्रेस के लिए तो पार्टी के सबसे वयोवृद्ध और वरिष्ठ नेता का अपमान करना कोई बड़ी बात नहीं है। ऐसे में उनकी दुकान में 'मोहब्बत' से ज्यादा अपमान होता ही नजर आता है। ताजा उदाहरण एआईसीसी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे का है। देश ने देखा कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के अधिवेशन के दौरान किस प्रकार खरगे जी चिलचिलाती धूप में खड़े रहे। कड़ी धूप में बेहाल होकर वे कांग्रेस की 'मोहब्बत' को तरसते रहे। लेकिन कांग्रेस की 'मोहब्बत' की छतरी का सौभाग्य वरिष्ठता के बावजूद उन्हें नहीं मिल पाया। छतरी की छाया सिर्फ आपकी मां 'राजमाता' को ही दी गई।

खून के रिश्तों से भी नफरत!

आप अपनी पार्टी और परिवार के गिरेबां में झांकते जाएं, तो इतिहास के हर मोड़ पर यही पाएंगे कि सत्ता के लिए किस हद तक आप सबने हर तरफ नफरत फैलाने का काम किया है। दूसरों की बात जाने दें, आपके दिलों में तो अपनों के लिए भी मोहब्बत नजर नहीं आती।

आप ही बताइए, आपकी 'मोहब्बत की दुकान' में अपने दादा फिरोज गांधी के लिए कहां जगह है? आप इधर-उधर न जाने कितनी कब्रों पर जाते रहते हैं, लेकिन जरा अपने दिल पर हाथ रखकर बताइए कि पिछली बार आप उनकी कब्र पर मोहब्बत के फूल लेकर कब गए थे? आपके परिवार में इस 'फेक मोहब्बत' के इतने किस्से हैं कि आप पूरे सुन भी न पाएंगे। इसीलिए यहां आपके लिए कुछ ही उदाहरण देना चाहेंगे।

आपको भी शायद 28 मार्च, 1982 की वह तारीख याद हो। जब आपकी दादी अपनी छोटी बहू मेनका गांधी से इतनी 'मोहब्बत' से पेश आई थीं कि रातोंरात उन्हें घर से निकाल दिया था। तब देशभर के तमाम अखबारों के मुख्य पृष्ठ पर एक ही तस्वीर थी। उस तस्वीर में थीं प्रधानमंत्री निवास से आंखों में बेबसी के आंसू और मायूस चेहरे के साथ बेघर हो रहीं मेनका गांधी। गोद में था नन्हा बेटा वरुण, जो उस वक्त तेज बुखार से तप रहा था। पत्रकार खुशवंत सिंह ने अपनी किताब 'Truth, Love & a Little Malice' में लिखा है, "रात *11* बजे नींद से भरे हुए फिरोज वरुण को मेनका के हवाले कर दिया गया। प्रधानमंत्री की गाड़ी को यह आदेश दिया गया कि मेनका जहां चाहें, उन्हें वहां छोड़ दिया जाए।"

आपके लिए मोहब्बत के क्या मायने हैं, यह निजी रिश्तों में भी बखूबी उजागर हो रहा है। आपके भाई वरुण गांधी अपनी शादी का न्योता लेकर खुद अपनी ताई सोनिया के घर 10 जनपथ गए थे। याद है ना मोहब्बत के रिश्तों को निभाने के लिए न आप और न ही आपकी मां और बहन इस शादी में शामिल हुईं। जबकि इंदिरा गांधी से मिले असहनीय अपमान के बावजूद प्रियंका गांधी की शादी में वरुण गांधी शामिल हुए थे।

<u>वीरता की विभूतियों का अपमान</u>

कांग्रेस और आपके दिल में देश की सेना और आजादी के सेनानियों के प्रति कितना सम्मान है और कांग्रेस नेता उन्हें मोहब्बत की किन नजरों से देखते हैं, यह बताने के लिए दो उदाहरण ही काफी हैं। देश को 1971 के भारत-पाक युद्ध में शानदार जीत दिलाने वाले सेना प्रमुख और फील्ड मॉर्शल सैम मानेकशॉ को 32 सालों के बाद उनका हक तब मिला, जब एपीजे अब्दुल कलाम राष्ट्रपति बने। यह भी जान लीजिए कि देश को आजादी दिलाने के आंदोलन में वर्षों तक काला पानी की सजा पाने वाले वीर सावरकर के प्रति भी आपकी खुद की मोहब्बत किन अल्फाजों में अभिव्यक्त होती है, 'मेरा नाम सावरकर नहीं है। मैं गांधी हूं। मैं माफी नहीं मांगूंगा।'

भारतीय जनता पार्टी
Bharatiya Janata Party

राहुल जी,आपकी और आपकी पार्टी की 'मोहब्बत' की इतनी सारी मिसालें हैं, जिनको लेकर हम तो बस यही कह सकते हैं-
"हमको नफरत करने से फुरसत न मिली दोस्तो,
वरना ये बताते कि मोहब्बत किसको कहते हैं!"

उम्मीद है कि अपने परिवार और कांग्रेस की 'मोहब्बत' के ऐसे सभी उदाहरणों को आप गंभीरता से लेंगे। इसके साथ ही आपसे आशा है कि 'मोहब्बत की दुकान' के नाम पर नफरत का जहर बोने के बजाए आप शांति, सद्भाव और एकजुटता की देश की भावना को समझने का प्रयास करेंगे।

सादर,

Col Rajyavardhan Rathore

पूनम महाजन

प्रवेश साहिब सिंह

6-ए, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002, दूरभाष : 011-23500000 फैक्स : 011-23500190

6-A, Deendayal Upadhyay Marg, New Delhi-110002 Ph : 011-23500000 Fax : 011-23500190